Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 9, Print Issue 1&2 - 2023, Pg. No. 8-11
Peer Reviewed Journal

Review Article

वर्तमान परिपेक्ष्य में महात्मा गांधी के समन्वयवादी दर्शन की प्रासंगिकता

Leena Jha

Professor, Department of Yoga, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand.

I N F O

E-mail Id:
Email-leenajh@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0007-3943-8914

Date of Submission: 2023-03-05
Date of Acceptance: 2023-04-06

सारांश

वर्तमान समय पूर्णतः भौतिकवादी हो गया है। लोग भौतिक समृद्धि और तकनीकी विकास के नाम पर पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों के व्यापक दोहन की होड़ में लगे हुए हैं। पर्यावरण एवं विश्व इस कारण विनाष के कगार पर पहुंच गया है। प्राचीन भारतीय समाज में आत्मसंयम, आत्मनिर्भरता, मानव रिश्तो एवं मानव मूल्य केंद्रित विकास को महत्व दिया जाता था।

वर्तमान समय में मशीनी एवं तकनीकी सभ्यता विचार विमर्श का एक महत्वपूर्ण आयाम बन गया है। तकनीकी विकास की अंधी दौड़ की सबसे दुखद त्रासदी मानवीय मूल्य से हाथ धोना है। आज के दौर में नैतिकता और आध्यात्मिकता का स्थान गौण हो गया है। आध्यात्मिकता एवं नैतिकता के अभाव में समाज दिषाहीन हो रहा है।

गांधीजी मुलतः मानव आदि थे। मानव कल्याण ही उनके जीवन का लक्ष्य था। वे समाज के विकास के लिए समन्वयवाद को आवष्यक मानते थे। जिस प्रकार परमहंस का जीवन धर्म के अभ्यास एवं अनुशीलन का जीवन है उसी प्रकार गांधी के जीवन दर्षन के संबंध में निसंकोच कहा जा सकता है कि उनका व्यवहार का जीवन है।

तुलसीदास एवं रामकृष्ण परमहंस की तरह महात्मा गांधी का दर्शन भी समन्वयवादी दर्शन का ही स्वरुप है। यद्यपि वे तकनीकी एवं शास्त्रीय अर्थ में दर्शन शास्त्री नहीं थे। फिर भी उनके जीवन एवं चिंतन से ऐसा स्पष्ट ज्ञात होता है कि दर्शन के विभिन्न क्षेत्रों में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।डॉ राधाकृष्णन इनकी महत्ता एवं योगदान की सराहना करते हुए उनकी उदारता एवं व्यापक दृष्टिकोण की प्रशंसा की है।[1]

शब्दावली: वर्तमान, तकनीकी, नैतिकता, अभ्यास, व्यवहार

जीवन परिचय

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर में एक बहुत ही धार्मिक परिवार में हुआ था। वह कानून की उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए और वहां से भारत 1891 में लौटे। 1893 में गांधी जी एक मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका गए। वहां अश्वेतों पर अंग्रेजों के द्वारा हो रहे अत्याचार और अन्य को देखा जो प्रवासी भारतीयों पर भी रंग एवं जातिवाद के नाम पर किया जा रहा था। गांधी जी ने अफ्रीका में ही 1893 से 1914 तक गोरी सरकार के विरुद्ध अपना अहिंसात्मक लड़ाई शुरू की और सत्याग्रह को माध्यम बनाया तथा उसे जारी रखा और सत्याग्रह का सफल प्रयोग वही किया। दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने अपनी नैतिक मान्यताओं पर ऐसी स्थिति में अमल किया जिसमें हजारों असहाय और पीड़ित व्यक्तियों के हित का प्रश्न सामने था।[2]

1914 में भारत लौटने पर मुंबई की जनता ने उन्हें महात्मा की उपाधि दी। गांधी जी ने 1921,1930 और 1942 के महान असहयोग आंदोलन में भारतीयों को सक्रिय किया। वे हिंदू मुस्लिम एकता तथा सह अस्तित्व के महान समर्थक रहे।

Copyright (c) 2023: Author(s). Published by Advanced Research Publications

गांधी जी का व्यक्तित्व मात्रा बहिर्मुखी नहीं था, वह अंतर्मुखी भी थे। गांधी जी विविध आयामी व्यक्तित्व के प्राणी थे। गांधी जी ना तो विशुद्ध बुद्धिवादी हो सके और ना ही उनमें एक संत की तटस्थता आरोपित हो सकी। वे बच्चों की तरह खुलकर हंसते थे और सबके सामने रोने से भी नहीं हिचकिचाते थे। उनमें करुणा और संवेदना इतनी थी कि वह हर दर्द बांटने के लिए तत्पर रहते थे। किंतु संवेदनशील होने के साथ–साथ वह अनुशासन में भी इतने कठोर थे कि अपराधी को दण्ड देने से पीछे नहीं रहते थे। उनका व्यक्तित्व विविधता और विचित्रता के साथ एकरूपता एवं अनुशासन को इस प्रकार संजोए हुए था कि उनके व्यक्तित्व में भी विचारों के विरोधाभास का चमत्कारी सह अस्तित्व सर्वथा सहज प्रतीत होता है।[3]

महात्मा गांधी में षुरू से अंत तक समझाने बुझाने की शक्ति सुस्पष्ट थी। उनके षब्द एवं कार्य देश में प्रकाश की तरंगों की भांति छाए हुए थे। उनके संदर्भ में कहा गया है कि ''इस दुबले पतले छोटे से इंसान के भीतर इस्पात का कुछ था जो उसे चट्टान की तरह मजबूत बनाता था। उनमें कुछ ऐसी गरिमा थी जो दूसरों को खुशी–खुशी उनकी बात मान लेने के लिए बाध्य करती थी।''[4] ''वे पृथ्वी के महान से महान व्यक्तियों से पूर्ण आत्मविश्वास से मिलते जुलते थे।''5

गांधी जी ने कभी भी स्वयं को महात्मा नहीं कहा। उन्होंने स्वयं को सदैव सत्यशोधक कहा और माना। महात्मा की उपाधि गांधी जी पर आम जनता द्वारा थोपी गई। गांधी जी ने जो भी कहा उसे अपने जीवन में उतार कर दिखाया। शाश्वत मूल्यों को अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास किया और कहा कि आप सब लोग भी ऐसा कर सकते हैं, आपको करना चाहिए, आप कीजिए। गांधी जी नैतिक क्रांतिकारी थे। उनका विश्वास था कि हिंसा सामाजिक व्यवस्था की वास्तविक क्रांति में विघ्न डालता है। उनके अनुसार हिंसा मानव जाति को सत्यानाश के ग्रत में पटक देता है। उनके अनुसार किसी भी समस्या का वास्तविक समाधान शांति है।

गाँधी और दर्शन

गांधी जी दर्शन को केवल सौहार्दपूर्ण सैद्धांतिक और बौद्धिक विवेचन तक सीमित नहीं मानते हैं। उनके अनुसार दर्शन केवल विचार की ही प्रणाली नहीं है बल्कि दर्शन जीवन जीने की एक कला है। वे प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुसार दर्शन को जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं। उनके अनुसार दर्शन का उद्देश्य जीवन को बेहतर बनाना है। जीवन और जगत का ऐसा कोई पहलू नहीं जिस पर गांधी जी ने विचार नहीं किया है। वे राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक हर पहलू पर गंभीरता से विचार करते हैं और इसका आधार स्तंभ नैतिकता को बतलाते हैं। गांधी जी ने नैतिकता को जीवन के हर पहलू पर प्रकाष डालने के लिए इस्तेमाल किया है। गांधी जी ने जीवन में नैतिकता पर प्रकाश मात्रा भारतीय जीवन में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में फैलाया है। राष्ट्रीय आंदोलन का यह महानायक मात्रा अंग्रेजों से मुक्ति को ही आजादी नहीं मानता बल्कि कुरीतियों एवं कुप्रथाओं से भी समाज को मुक्ति मिले इस पर जोड़ देते हैं।इन्होंने समाज के संपूर्ण विकास तथा मानव मूल्य को सर्वोच्च मान दिया।

गाँधी और धर्म

गांधी जी का परिवार वैष्णव परंपरा को मानने वाला परिवार था। इसलिए धार्मिक अभिरुचि उन्हें अपने परिवार से विरासत में मिली। यही कारण था कि उन्हें अध्यात्म के साथ नैतिक आदर्शवाद में स्वाभाविक रुचि थी। यही कारण है कि उनके ईश्वर की अवधारणा में सत्य को ही ईश्वर के रूप में स्वीकारा या विवेचित किया है। वो ईष्वर और सत्य को विभक्ति नहीं करते हैं। इस संबंध में प्रोफेसर बी० के० लाल की निम्नलिखित पंक्तियों को उद्धित किया जा सकता है ''फिर भी अपनी सुविधा के अनुसार मोटे तौर से हम इतना तो कह ही सकते हैं कि गांधी का ईश्वर विचार ''वैष्णव मत'' के ''ईष्वर वादी'' विचार जैसा ही है । शैशवकाल में ही उनके मन पर वैष्णव मत की छाप पड़ी थी। उनका लालन–पालन जिस ढंग से हुआ था,उससे भी वैष्णव आस्था उनके मन में पकड़ती रही । अतः वे अपने ईश्वर का उसे रूप में चित्रण करते हैं, जिस रूप में शास्त्रीय इश्वरवाद में विवरण होता है,परंतु उस चित्रण में भी वैष्णव मत का छाप स्पष्ट दिखता है।''[6]

गांधी जी अद्वैतवाद से भी प्रभावित थे और इस प्रभाव में कभी–कभी अपने तर्कों से अद्वैतवाद एवं ईष्वर बाद के बीच सामंजस स्थापित करने का प्रयास करते थे। इसलिए वे जब ईश्वर को सत्य और सत्य को ईश्वर कहते हैं, तो स्पष्ट रूप से ईश्वर के सगुणवादी विवेचना से आगे बढ़कर अद्वैतवादी विचारधारा से प्रभावित दिखते हैं। वे ईश्वर सत्य के बदले सत्य ही ईश्वर है की बात स्थापित करते हैं। महात्मा गांधी के ईश्वर संबंधी अवधारणा की व्याख्या करते हुए प्रोफेसर बी० के० लाल का कहना है ''वे ईश्वर को सत्य ना कह के सत्य ही ईश्वर है कहने लगे। वैसे इस प्रकार का परिवर्तन तर्क उपर्युक्त नहीं होता है। ''हम सभी मरनशील हैं'' वाक्य के स्थान पर यह नहीं कह सकते हैं कि ''सभी मरनशील जीव मनुष्य है'', हालांकि तर्कशास्त्र में अयुक्ता का भी अपवाद है, किंतु किसी वाक्य के उद्देष्य और विधेय दोनों का एक रूप हो,दोनों में पूर्ण तादात में हो तो इस प्रकार के परिवर्तन तर्कपूर्ण कहे जाएंगे।''[7]

अतः गांधी जी के समर्थन में यही कहा जा सकता है कि जब उनके अनुसार ईश्वर और सत्य दोनों पूर्ण रूप से एक हैं तो ईश्वर के स्थान पर सत्य को ईश्वर कहने में दोश नहीं होगा। गांधी जी अपने दार्शनिक चिंतन में सत्य को सर्वोच्च स्थान देते हैं और वो ईश्वर की जगह सत्य को स्थापित करते हुए ईश्वरवाद से बढ़कर अद्वैतवाद की तरफ झुकते दिखते हैं।

जहां तक जगत के संबंध में प्रश्न उठता है कि वह वास्तविक है या नहीं तो यहां कई विचारधारा जगत को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते हैं, किंतु गांधी जी संसार को विवर्त नहीं मानकर स्वतंत्र सत्ता मानते हैं और उसे वास्तविक मानते हैं। इस संबंध में प्रोफेसर बी० के० लाल स्पष्ट रूप से बतलाते हैं कि – ''गांधी जी के अनुसार जगत के वास्तविकता में विश्वास करना उचित है। उनका कहना– गांधी जी के अनुसार जगत को वास्तविक मानना व्यावहारिक है। यदि जगत को हम वास्तविक मानते हैं तो यह भी मानना पड़ता है कि इसी जगत में हमें जीना है, कार्य करना है। तब ना तो जगत के किसी तत्व को अवास्तविक कहने की आवश्यकता रह जाती

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202104

है और ना जीने के संकल्प के शिथिल होने की आवश्यकता रह जाती है। अब गांधी जी की यह अनुशंसा अर्थ पूर्ण हो जाती है कि जीवन अर्थपूर्ण है, जगत में प्राकृतिक शक्तियों के मध्य जीना है। तब प्रकृति मात्र सौंदर्य का भंडार नहीं है, प्राकृतिक शक्तियां मात्रा काल्पनिक आकर्षण का स्रोत नहीं है। बल्कि जगत अथवा प्रकृति हमारे लिए कर्म स्थल है। प्रकृति को कर्मस्थल कहने से गांधी जी का तात्पर्य है कि जगत एक वास्तविक कार्य क्षेत्र प्रस्तुत करता है, जहां हमें यानी मानव को आत्म अनुशासन का अवसर मिलता है। यहां विभिन्न परिस्थितियां उपस्थित होती हैं, जिससे जूझने के लिए आत्माबल, नैतिक एवं धार्मिक बल का संतुलन रखना होता है। सहयोग की भावना को बढ़ावा मिलता है। गांधी जी प्रकृति के प्रति मानव को सजग करते हुए कहते हैं की प्रकृति हमारी जीवनदायनी है, हमें इसकी सुरक्षा करते हुए जीवनयापन करना चाहिए। प्रकृति की वास्तविकता को स्वीकारने के लिए प्रेरित करते हुए गाँधी जी ने नंगे पांव चलना और कृत्रिम पदार्थों को त्याग कर पूर्णतः प्राकृतिक चीजों को जीवन में शामिल करने पर बल दिया।''[8]

गांधी जी मानव के स्वरूप पर विचार करते हुए उसके आत्म तत्व की ही बात नहीं करते बल्कि मानव के शारीरिक तत्व की भी बात करते हैं। गांधी जी जहां मानव जीवन की अवधारणा में उसके सामाजिक एवं व्यावहारिक पक्ष को स्वीकारते हैं वहीं वह उसके लिए आध्यात्मिक अवधारणा को भी आवश्यक मानते हैं। इस तरह गांधी जी मानव में आत्म तत्व एवं भू तत्व दोनों को ही स्वीकार करते हैं। इस तरह गांधी जी के दर्शन में तत्व मीमांसीय पक्ष में अद्वैतवाद, ईश्वरवाद और यथार्थवाद का सम्मिलित प्रभाव दिखता है। चुंकि गांधी जी दार्शनिक से इतर सामाजिक कार्यकर्ता ज्यादा थे इसलिए हमें उनके दर्शन में यह भाव स्पष्ट रूप से दिखता है कि वह मानव कल्याण के दृष्टिकोण से विवेचना ज्यादा करते हैं।

गाँधी जी के नैतिकता, सत्य एवं अहिंसा पर मत

गांधी जी के दर्शन में नैतिक पक्ष की प्रबलता स्पष्ट दिखती है। गांधी जी आधुनिक परिवेश में नैतिक मूल्य खास कर सत्य एवं अहिंसा पर विशेष जोर देते हैं। अहिंसा का सफलतम अर्थ है हिंसा नहीं या ''हत्या नहीं करना''। अहिंसा हिंसा के विपरीत है। गांधी जी हिंसा का विश्लेषण के साथ अर्थ स्पष्ट करते हैं। उनके अनुसार हिंसा के अंतर्गत किसी को भी किसी प्रकार से पीड़ा पहुंचाना, किसी को क्षति या हानि पहुंचाना, यह सब अपने आप में हिंसा नहीं है किंतु हिंसा के कारण जरूर बनते हैं, इसलिए वे भी हिंसा में शामिल होते हैं। गांधीजी मात्रा जान लेना ही हिंसा नहीं मानते हैं। उनके हिसाब से कड़वे बोल से किसी के आत्मा को आहत करना भी एक तरह का हिंसा है। क्रोध, लोभ, स्वार्थ या जानबूझकर किसी को पहुंचाई गई पीड़ा भी हिंसा ही होती है। गांधी जी की दृष्टिकोण में क्रोध, लोभ, और अन्य किसी भी प्रकार का विकार का त्याग अहिंसा है। गांधी जी के तीन आमोध अस्त्र सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह है, जिसमें अहिंसा सबसे महत्वपूर्ण अस्त्र है। गांधी जी की सोच थी कि मानव जीवन के हर समस्या का समाधान अहिंसा है। गांधी जी के अनुसार अहिंसा मात्रा दर्षन नहीं है बल्कि कार्य करने की एक पद्धति है। यह मानव हृदय परिवर्तन का साधन है। गांधी जी अहिंसा की बात करते हुए मानव जीवन में मात्र एक पक्षीय सोच नहीं रखते, वे मानव जीवन के लिए नुकसान दायक जीव जंतु को मारने की अनुमति देते हैं। ''गांधी जी की अहिंसा में वैचारिक सावधानी भी नितांत आवश्यक है, वाणी और संवेगों को भी नियंत्रित करना अनिवार्य है। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में संयम रखना अपेक्षित है। संक्षेप में गांधी जी की अहिंसा की अवधारणा मन, वचन और कर्म से संबंधित है।''[9]

गांधी जी सत्य के प्रति उपनिषद एवं जैन दर्शन से प्रभावित हैं। वही वह दूसरी तरफ टॉलस्टॉय एवं रस्किन जैसे विचार को स भी प्रभावित हैं। गांधी जी ''अहिंसा परमो धर्म'' एवं ''सत्यमेव जयते'' को जीवन का आधार मानते हैं। गांधी जी के अनुसार ''सत्य साध्य है'' और ''अहिंसा साधन''।

सत्याग्रह का शाब्दिक अनुवाद है ''सत्य का आग्रह'' गांधीजी ने इसे कभी–कभी सत्य की शक्ति, आत्म शक्ति, तथा प्रेम शक्ति भी कहा है। प्रोफेसर बी० के० लाल इसकी व्याख्या करते हुए लिखते हैं – ''गांधी को यह अवगती है कि सत्य एवं अहिंसा का सैद्धांतिक विवेचन व्यर्थ है। यदि व्यवहार में इनके पालन के ढंग का निर्धारण ना हो। इसी अवगति अनुरूप उन्होंने सत्य पर किए अपने विभिन्न प्रयोगों के आधार एवं माध्यम से अहिंसा के पालन के ढंग को विकसित किया तथा उसे उन्होंने सत्याग्रह कहा। अपने जीवन भर गांधी अहिंसा पालन के ढंग पर नए–नए प्रयोग करते रहे, जिसके फल स्वरुप उनके विचारों में सत्याग्रह का एक स्पष्ट ढंग विकसित हो गया। गांधी के सत्याग्रह विचार को समझने के लिए गांधी के लेखों में लिखा हुआ एक लंबे उदाहरण से हम प्रारंभ कर रहे हैं। जिसमें गांधी के सत्याग्रह विचार की विशिष्टताओं का एक स्थान पर स्पष्ट संकेत उपलब्ध है।''[10]

गांधी जी के सच में धैर्य, त्याग और असीम आस्था का विशेष स्थान है। इन सब बातों का प्रभाव गांधी जी के सत्याग्रह विचारधारा पर स्पष्ट दिखता है। गांधी जी के लिए सत्याग्रह एक आदर्श है मात्र विचारधारा नहीं। यह कर्म योग का एक व्यावहारिक पक्ष है और यह एक क्रियाशील अवधारणा है। जिसका सफल परिक्षण गांधी जी ने कुछ एक क्षेत्र में किया। अंग्रेजों के सभी प्रकार के अत्याचार एवं षोशण के विरुद्ध गांधी जी ने सत्याग्रह के द्वारा ही विरोध जताया और अंग्रेजों को झुकने पर मजबूर किया। उन्होंने अपने विशुद्ध आत्मबल का प्रयोग कर असहयोग और सत्याग्रह का मार्ग अपना कर अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया। उन्होंने सत्याग्रह को मानव का सात्विक अधिकार बतला किसी भी अन्याय के विरुद्ध इसके द्वारा विरोध को उचित कहा।

उनका कहना था कि सत्याग्रह एकमात्र अस्त्र है जो अन्याय और बुराई का विरोध कर सत्य और न्याय दिला सकता है। वे कहते थे सत्य का आग्रह ही सत्याग्रह है इसलिए इसमें कोई दुराब या छिपाव संभव नहीं है। गांधी जी के शब्दों में हम प्रणालियों, पद्ध तियों पर आक्रमण कर सकते हैं किंतु व्यक्तियों पर कदापि आक्रमण नहीं करना चाहिए। सत्याग्रह में अंर्त आत्मा की आवाज का विशेष महत्व है। सत्याग्रही को नैतिक स्तर पर शुद्ध और सही जानकारी होनी चाहिए। उसमें आत्मविश्वास होना चाहिए कि वह विपरीत

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202104

परिस्थितियों में भी अपने सत्य पर अडिग रहकर अन्याय का विरोध कर सकता है।

गांधी जी ईश्वर के प्रति आस्था का भी स्पष्ट रूपेण उल्लेख करते हैं। ईश्वर के प्रति आस्था को वह मानव के लिए आवश्यक और अति महत्वपूर्ण सद्गुण बतलाते हैं। इस संबंध में प्रोफेसर बी० के० लाल की पंक्तियां ''गांधी का विष्वास है कि इनमें से किसी भी सदगुण का अनुशीलन तब तक उचित ढंग से नहीं हो सकता जब तक इन सबों के पीछे ईश्वर के प्रति अटूट आस्था ना हो। ईश्वर के प्रति अटूट आस्था का अर्थ यह विश्वास है कि ईश्वर परम शुभ है, अतः उसकी सृष्टि का स्वरूप भी नैतिक है। हम नैतिक आचरण पूर्ण हृदय से तभी कर सकते हैं जब हमारे मन में ऐसा अटूट विश्वास हो। अतः गांधी के अनुसार ईश्वर की ''आस्था'' प्रेम की पूर्ण मान्यता है। यह मात्र धार्मिक विष्वास नहीं अपितु नैतिकता एवं सद्गुणी जीवन का विष्वासात्मक आधार है।''[11]

गांधी के अनुसार धर्म एवं नैतिकता में धनिश्ट संबंध है। गांधी जी पूजा – प्रार्थना में विष्वास करते थे। उनका कहना था कि धर्म का उपयोग राश्ट्र को जगाने के लिए या विकसित करने के लिए होना चाहिए। उनके अनुसार मेरा धर्म सत्य एवं अहिंसा पर आध ाारित है , सत्य मेरा भगवान है और अहिंसा उसे स्वीकार करने का साधन है। गांधी जी कहते हैं कि मैं उसे धार्मिक कहता हूं जो दूसरों का दर्द समझता है। वे हिंदू धर्म का सबसे बड़ा दोश मनुश्यों के बीच छुआछूत को मानते थे। वे बलि प्रथा की भी निंदा करते थे। वे स्वधर्म के साथ–साथ अन्य धर्मों का भी समान आदर करते थे। गांधी जी के षब्दों में ''मैं यह नहीं मानता की वेद पवित्र ग्रंथ है। मुझे लगता है कि बाइबल, कुरान और जिंद अवेस्ता भी समान रूप से पवित्र प्रेरित है। हिंदू धर्म चरमपंथियों के लिए नहीं है। इसमें संसार के सभी महान धार्मिक पुरुषों की पूजा का स्थान है। उनका कहना है कि सभी लोग अपने धर्म के अनुसार ईश्वर की पूजा करें। इसी के कारण गांधी का अन्य सभी धर्म के साथ संबंध मेल का है।''[12] उन्होंने सभी धर्म के मूल्य सत्य को स्वीकार किया।

गांधी जी का कहना था कि ''जब मैं भागवत गीता को पढ़ लेता हूं तो मेरे मन में निराशा के बदले छंट जाते हैं और मैं खुश हो जाता हूं।'' कहा गया है की'' भागवत गीता'' भारतीय चेतना का आधारभूत ग्रंथ है। यद्यपि उपनिशद भी गांधी के मानस को दिशा देने में निर्णायक भूमिका निभाते हैं, जिससे वो समझ सकें कि यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य देव की पूजा उपासना करता है, यह सोचते हुए कि वह एक है और उपास्य देव दूसरा है तब वह सत्य को जानता ही नहीं।''[13] गांधी जी के अनुसार सत्य की प्राप्ति ही मनुष्य की प्रथम साधना होनी चाहिए एवं सत्याग्रह आत्मा की शक्ति । इस तरह निश्चित रूप से गांधीवाद का आधार धर्म ही है। लेकिन गांधी जी का धर्म निज मानसिकता से उठकर विष्व बंधुत्व का आह्वान करता है। वे अपने दर्शन में धार्मिक संक्रियता को दूर कर धार्मिक संकीर्णता को दूर कर धार्मिक सहिष्णुता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे कहते हैं ''मैं सत्य को ही भगवान मानता हूं। मेरी दृश्टि में भगवान को जानने का एक ही उपाय है और वह है अहिंसा और प्रेम । उस भूमि की सेवा करना जिस पर पैदा हुआ हूं , मेरा पवित्र धर्म है।''

निष्कर्ष

इस तरह वर्तमान परिवेश में गांधी जी का विचार कल्याणकारी और हितकारी है। उनके अनुसार मानव जीवन के हर पहलू पर धर्म का असर समाज के सम्पूर्ण विकास में सहायक है। जिस दिन मानव जीवन में अपनी समग्रता में नीति को आत्मसात कर लेगा उसी दिन से धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो जाएगा। धरती का स्वर्गीकरण करने की कुंजी महात्मा गांधी के धर्म नीति में है। मनुष्य का जीवन सुख–शांति एवं समृद्धि से तभी पल्लवित होता है जब वह अपनी समग्रता में नीति के जल से उसे संचित करता है।

संदर्भ सूचीः

1. राधा कृष्णन डॉ. एस. – अमर गांधी, भवन जर्नल, खंड – 42, संख्या 5, अक्टूबर, 15,1995, गांधी जयंती। 2, 1995, पृष्ठ–31
2. डॉक्टर विश्वनाथ नरवणेः आधुनिक मानवीय चिन्तन, पृ० – 195
3. डॉ प्रभात कुमार भट्टाचार्यः गांधी दर्शन, पृ०–1
4. डॉ विश्वनाथ नरवणेः वही, पृ०–191
5. नेहरू ऑटोबायोग्राफी, पृ०–126
6. बसंत कुमार लालः समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, बनारस, पटना, बैंगलोर, मद्रास, प्रथम संस्करण, दिल्ली–1991, पृ०–116–118
8. वही, पृ०–111
9. प्रोफेसर बी० के० लालः ओपसिट, पृ०–129–130
10. षंभू रत्न त्रिपाठीः गांधी धर्म और समाज, पृ०–37
11. प्रोफेसर बी० के० लालः समकालीन भारतीय दर्षन, पृ०–142
12. वहीः ओपसिट, पृ०–173
13. रोला रोमांः महात्मा गांधीः जीवन और दर्शन, लोक भारती प्रकाषन, इलाहाबाद, पृ०–18
14. राधाकृष्णनः भारत और विश्व, पृ०–103

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202104